शोध : परिभाषा और व्याख्या

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

शोध शब्द 'शुध्' धातु से घञ् प्रत्यय लगने से बनता है। शोध का मूल अर्थ है-शुद्धि या संस्कार। किसी भी वस्तु का शोध करना-उसमें मिले हुए अपद्रव्यों (बुरा या खोटा द्रव्य) अथवा विजातीय (पराई या असम्बद्ध) वस्तुओं को अलग करके वस्तु के वास्तविक स्वरूप को प्रकाशित करना 'शोध' कहलाता है।

'शुध्' धातु से निर्मित संज्ञा 'शोधन' का अर्थ है शुद्ध या पवित्र करना, दुरुस्त करना, छानबीन, जाँच, अनुसन्धान। व्यापक रूप में शोध शब्द संस्कार-परिष्कार के आशय के साथ खोजने, मनन-चिन्तन करने, जाँचने-परखने के अभिप्राय को भी अपने लघु कलेवर में समेटे हुए है।

शोध मानव की सहज प्रवृत्ति है। मनुष्य विवेकशील है। वह पशुओं की तरह मात्र शारीरिक अपेक्षाओं-आहार, निद्रा, भय, मैथुन-का ही अनुभव नहीं करता। उसकी शारीरिक भूख से अधिक मन की भूख होती है।आचार्य भर्तृहरि ने बड़ी स्पष्टता से कहा है-

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च समानमेतत्पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

यहाँ धर्म शब्द उपलक्षण है विवेक का, मानसिक विचारप्रक्रिया का। मन संकल्प एवं विकल्प से ओत-प्रोत होता है। यही मन मनुष्य की सबसे बड़ी निधि है। यह मन मनुष्य को शोध की ओर प्रवृत्त करता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने खोजने की स्थूल क्रिया के लिए 'शोध' के तद्भव रूप 'सोध' का प्रयोग किया है। उन्होंने सूक्ष्म चिन्तन-मनन मन्थन आदि के अर्थ में भी इस शब्द का व्यवहार किया है।

स्पष्ट है कि शोध शब्द प्राप्त सामग्री के परिष्कार या संशोधन तक ही सीमित नहीं है, वरन् यह तथ्यों की खोज और तत्त्वों के चिन्तन-मन्थन के अर्थ का भी द्योतक है। वस्तुतः शोध शब्द के तीन

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अभिप्राय हैं-क) नए तथ्यों की खोज, ख) खोजे हुए तथ्यों या तत्त्वों का संशोधन, ग) खोजे हुए तथ्यों या तत्त्वों का मन्थन और मूल्यांकन।

शोध का सम्बन्ध विद्या और ज्ञान से है। विद्यासम्पन्न, ज्ञानसम्पन्न व्यक्ति ही शोध की ओर प्रवृत्त होता है। शोध का अर्थ है ज्ञान की पिपासा। हम जो नहीं जानते हैं, उसे भी जानने की आकांक्षा। शोध के द्वारा ही मनुष्य ने पारलौकिक जगत् की सच्चाइयों को जाना, ग्रह-नक्षत्रों की गतिविधियों का पता लगाया तथा प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को हस्तामलकवत् देखा। शोधकार्य का प्राणतत्त्व है-नए तथ्यों की खोज। इस कार्य में शोधकर्ता की आलोचनात्मक प्रतिभा तथा उसके ठोस निष्कर्षों का सर्वाधिक महत्त्व होता है।

अपने वर्तमान रूप में शोध की अवधारणा पाश्चात्य 'रिसर्च' पर आधारित है। वैब्सटर्स डिक्शनरी में शोध के स्वरूप को बहुत ही व्यापक रूप से परिभाषित करते हुए लिखा गया है-

Research is a critical and exhaustive investigation or examination having for its aim the discovery of new facts and their correct interpretation, the revision of accepted conclusions, theories and laws.

उपर्युक्त परिभाषा से निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश पड़ता है-

क) शोध एक समग्र समीक्षात्मक परीक्षण है,

ख) शोध का लक्ष्य है नए तथ्यों की खोज तथा खोजे गए तथ्यों की तर्कसंगत विवेचना,

ग) स्थापित मान्यताओं, सिद्धान्तों और नियमों की बारीकी से जाँच करके उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन-संशोधन करना भी शोध का लक्ष्य है।

वस्तुतः मानव के विकास, सुख और समृद्धि के मूल में अंततः एक चीज ही होती है। वह है, ज्ञान और उसका अनुप्रयोग। इसलिए ज्ञान में वृद्धि मनुष्य की जन्मजात प्रवृति होती है। इसके लिए वह हमेशा प्रयत्न करता रहता है, सत्य जानने का प्रयास करता रहता है। इस प्रयास के क्रम में वह नवीन ज्ञान की प्राप्ति के साथ ही पहले से प्राप्त ज्ञान की सत्यता की जांच-परख भी करता है। इस प्रक्रिया से ज्ञान के आयाम में विस्तार होता है। वस्तुतः यह प्रक्रिया ही शोध है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

हमारे प्राचीन आचार्यों ने ज्ञान की सम्पूर्ण प्रक्रिया को तीन स्तरों पर व्यवस्थित किया है-शोध, बोध तथा प्रबोध-आदौ शोधस्ततो बोधः प्रबोधश्चाप्यनन्तरम् अर्थात् सर्वप्रथम होता है ज्ञान का शोध, तदनन्तर श्रेष्ठ गुरु के प्रवचन से उसका बोध होता है और अन्त में उसकी अनुभूति।

व्यापक अर्थ में शोध किसी विषय की गहराई में जाकर सम्यक् विचारपूर्वक उसके मर्म या रहस्य का उद्घाटन, तत्त्वोन्मीलन तथा उसका व्यवस्थित प्रतिपादन है।

वस्तुतः शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धान्तों का उद्घाटन करता है।

किसी भी ज्ञान की शाखा में नवीन तथ्यों की खोज के लिए सावधानीपूर्वक किए गए अन्वेषण या जांच- पड़ताल को शोध की संज्ञा दी जाती है। ज्ञान को खोजना, विकसित करना और सत्यापित करना शोध है। शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है तथा ज्ञान भंडार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।

शोध उस प्रक्रिया अथवा कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन- विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है।

व्यापक अर्थ में शोध किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना' या 'विधिवत गवेषणा' करना होता है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुराने वस्तुओं एवं सिद्धान्तों का पुन: परीक्षण करना, जिससे की नए तथ्य प्राप्त हो सके, उसे शोध कहते है। विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण एवं यथासम्भव प्रभूत सामग्री संकलित कर सूक्ष्मतर विश्लेषण-विवेचन और नए तथ्यों, नए सिद्धान्तों के उद्घाटन की प्रक्रिया अथवा कार्य शोध कहलाता है।

विदित है कि यह संसार प्राकृतिक एवं चमत्कारिक अवदानों से परिपूर्ण है। अनन्त काल से यहाँ तथ्यों का रहस्योद्घाटन और व्यवस्थित अभिज्ञान का अनुशीलन होता रहा है। कई तथ्यों का उद्घाटन तो

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

दीर्घ अन्तराल के निरन्तर शोध से ही सम्भव हो सका है। जाहिर है कि इन तथ्यों की खोज और उसकी पुष्टि के लिए शोध की अनिवार्यता बनी रही है। मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने ही शोध-प्रक्रिया को जन्म दिया। शोध-कार्य सदा से एक प्रश्नाकुल मानस की सुचिन्तित खोज-वृत्ति का उद्यम बना रहा है।

किसी सत्य को निकटता से जानने के लिए शोध एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती आई है। समय-समय पर विभिन्न विषयों की खोज और निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता गहन शोध की मदद से ही सम्भव हो पाई है।

तथ्यों के अवलोकन से कार्य-कारण सम्बन्ध ज्ञात करना शोध की प्रमुख प्रक्रिया है। इस अर्थ में हम स्पष्ट देख पा रहे हैं कि शोध का सम्बन्ध आस्था से कम, परीक्षण से अधिक है। शोध-वृत्ति का उद्गम-स्रोत प्रश्नों से घिरे शोधकर्मी की संशयात्मा होती है। प्रचारित मान्यता की वस्तुपरकता पर शोधकर्मी का संशय उसे प्रश्नाकुल कर देता है; फलस्वरूप वह उसकी तथ्यपूर्ण जाँच के लिए उद्यमशील होता है। संशय-वृत्ति उसके जैविक विकास-क्रम का हिस्सा होता है। यह वृत्ति उसका जन्मजात संस्कार भले न हो, पर जाग्रत मस्तिष्क की प्रश्नाकुलता का अभिन्न अंग बना रहना उसका स्वभाव होता है। नए ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयत्न को विद्वानों ने शोध की संज्ञा दी है।

सत्य की खोज या प्राप्त ज्ञान की परीक्षा हेतु व्यवस्थित प्रयत्न करना शोध कहलाता है। अर्थात् शोध का आधार विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति है, जिसमें ज्ञान भी वस्तुपरक होता है।

यद्यपि शोध की एक सामान्य परिभाषा दी जा सकती है, तो भी ज्ञान के विविध क्षेत्रों के विविध शोध कार्यों का अवलोकन करने पर ज्ञात होगा कि उनकी प्रक्रियाओं , पद्धतियों और परिणामों के स्वरुपों में पर्याप्त भिन्नता होती है और सबको एक सुनिश्चित, नपी-तुली परिभाषा में बाँधना सम्भव नहीं है-

क) कुछ अनुसन्धानों में पदार्थपरक वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा उनके परिणामों का आविष्कार होगा,

ख) कुछ में विशाल क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा कुछ सामान्य तत्त्वों का उद्घाटन होगा,

ग) कुछ में प्रमाणों के आधार पर सैद्धान्तिक सामान्यीकरण का प्रयास होगा,

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

घ) कुछ में किसी विषय पर मत-मतान्तरों का विवेचन कर नए मत की स्थापना का प्रयत्न होगा,

ङ) कुछ में अज्ञात या अल्पज्ञात वस्तुओं के विस्तृत कर नए मत की स्थापना का प्रयत्न होगा।

खोज के लिए आधाररूप में प्रयुक्त सिद्धान्त, कार्य की प्रणालियाँ और वीक्षण की दृष्टियाँ भिन्न-भिन्न हो सकती है। पर सब में एक अनिवार्य लक्ष्य यह होता है कि ज्ञान-क्षेत्र को अधिक विस्तार देनेवाले किसी नये तथ्य या सत्य का उद्घाटन हो।

वस्तुतः कहा जा सकता है कि किसी सम्पूर्ण शोध के चार अंग होते हैं-

क) ज्ञान क्षेत्र की किसी समस्या को सुलझाने की प्रेरणा।

ख) प्रासंगिक तथ्यों का संकलन ।

ग) विवेकपूर्ण विश्लेषण एवं अध्ययन।

घ) परिणामस्वरूप निर्णय

एडवांस्ड लर्नर डिक्शनरी ऑफ करेण्ट इंग्लिश के अनुसार--किसी भी ज्ञान की शाखा में नवीन तथ्यों की खोज के लिए सावधानीपूर्वक किए गए अन्वेषण या जाँच-पड़ताल शोध है।

दुनिया भर के विद्वानों ने अपने-अपने अनुभवों से शोध की परिभाषा दी है। मार्टिन शटलवर्थ ज्ञानोन्नयन हेतु तथ्य-संग्रह को शोध कहते हैं। क्रेसवेल लक्षित विषय-प्रसंग की समझ पुख्ता करने हेतु तथ्य जुटाकर विश्लेषण करने की एक प्रक्रिया को शोध कहते हैं। लुण्डवर्ग के अनुसार शोध वह है जो अवलोकित तथ्यों का सम्भावित वर्गीकरण, सामान्यीकरण और सत्यापन करते हुए, पर्याप्त रूप से वस्तुविषयक और व्यवस्थित हो। डब्ल्यू०एस०मेनरो ने कहा है-"मूलभूत तथ्यों के आधार पर कठोर श्रम एवं विवेक से उपलब्ध किसी समस्या के समाधान की प्रक्रिया ही शोध है"। सामाजिक विज्ञानों के ज्ञान-कोष के अनुसार, "शोध वस्तुओं, प्रत्यायों तथा संकेतों आदि को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करता है, जिसका उद्देश्य सामान्यीकरण द्वारा विज्ञान का विकास, परिमार्जन अथवा सत्यापन होता है, चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो अथवा कला में। (Research is the manipulation of things,

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

concepts or symbols for the purpose of generalizing to extend, correct or verify knowledge whether that knowledge aids in the practice or an art.)

वस्तुतः शोध एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नए ज्ञान को प्रकाश में लाती है अथवा पुरानी त्रुटियों एवं भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान-कोष में वृद्धि करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है जिसमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उनका अवलोकन विश्लेषण करके नये तथ्यों या सिद्धान्तों का उद्घाटन किया जाता है। शोध का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा विशिष्ट समस्याओं का समाधान प्राप्त करना है। शोध के द्वारा या तो किसी नए तथ्य, सिद्धान्त, विधि या वस्तु की खोज की जाती है अथवा प्राचीन तथ्य, सिद्धान्त, विधि या वस्तु में परिवर्तन किया जाता है। शोध एक तर्कपूर्ण तथा वस्तुनिष्ठ है। इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वास्तविक आँकड़ों पर आधारित एवं तर्कपूर्ण होते हैं तथा व्यक्तिगत पक्षपात से मुक्त होते हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi